तुलसी "ओसिमम सेन्कटम लिन."

विशेषतायें एवं लाभः

- पत्तियों तथा बीजों में सुगंधित तेल पाया जाता है।
- तुलसी का उपयोग कफ सिरप, सर्दी की औषधियों, खांसी, सौन्दर्य प्रसाधनों, डेन्टल क्रीम, मुखशुद्धि, टूथपेस्ट एवं अन्य औषधियॉं बनाने में किया जाता है।

कृषि तकनीकः

मृदाः

- दोमट एवं रेतीली दोमट मृदा जिसका पी.एच. मान 5.0-8.5 तक हो एवं अच्छी जल धारण क्षमता हो, उपयुक्त है।

प्रसारणः

- तुलसी का प्रसारण बीजों एवं तने की कलमों द्वारा किया जाता है।
- बीजों को 1:4 अनुपात में रेत में मिला कर बोया जाता है।
- प्रति हेक्टेयर 800 से 1000 ग्राम बीजों की आवश्यक्ता पड़ती है।
- 10-15 दिनों में अंकुरण हो जाता है, 6-7 सप्ताह पश्चात 4-5 पत्तियों की अवस्था में पौधा स्थानान्तरण किया जाता है।
- तने की कलम द्वारा प्रसारण हेतु 8-10 गांठों युक्त कलमों को पोलीथीन की थैलियों में लगाया जाता है एवं यथा आवश्यकता सिंचाई की जाती है।
- 4-6 सप्ताह की जड़ों युक्त कलमों को खेत में स्थानान्तरित किया जाता है।

रोपणः

- 15-20 से.मी. की लम्बाई वाले पौधों को 40 x 40 से.मी. की दूरी पर रोपित किया जाता है।

खरपतवार नियंत्रणः

- प्रथम निराई, रोपण के एक माह पश्चात व दूसरी निराई अगले 30 दिन पश्चात करनी चाहिए। प्रत्येक कटाई के बाद एक निराई आवश्यक है।

सिंचाईः

- शुरूवाती एक माह तक, एक सप्ताह के अंतर से, तत्पश्चात 15-20 द्रिनों से सिंचाई करना चाहिए।

कटाईः

- प्रथम कटाई, रोपण के 60 से 80 दिनों पश्चात जब फूल पीले पड़ने लगें तब करनी चाहिए तत्पश्चात तीन माह के अंतर से कटाई करना चाहिए। कटाई खुली धूप में करनी चाहिए।

उत्पादनः

- औसतन 5,000 से 10,000 कि.ग्रा. ताजा शाक प्रति हैक्टेयर प्रति वर्ष प्राप्त होता है, जिससे 10 से 20 लीटर तक सुगंधित तेल प्राप्त होता है।

संकलनः
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005